

मा० अ०
७७

ते आनन्दं प्राप्तुं प्राण हीतभये २२ । २३ ताके अनन्तर इन्द्रहै सो ब्रह्माने आज्ञादियो वामनजीकू आगे करिके आकाशमार्ग करिके लोकपालन सहित स्वर्ग कू जातभयो २४ उपेन्द्र के भुजान करिके पालित भयो है अथ जाकों परमसम्पत्ति करिके युक्त ऐसो जो इन्द्र सो त्रिभुवन कू पाइके मसन्न होतभयो २५ ब्रह्मा रुद्र सनत्कुमार भृगवादिक मुनि पितर सगरे प्राणी सिद्ध जे देवता ते २६ विष्णुकों परमअद्भुत कर्मो ताहि गावत अपने स्थान ताहि जातभये और अदितिकी बड़ाई करतभये २७ हे कुलनन्दन ! मैने वामनजी कों चरित्र सब तेरे आगे कह्यो श्रीतानके पापकों नाश करन चारो है २८ वामनजी की जो महिमा ताकों जो धार ताहि जो गावतहोयहै सो मनुष्य पृथ्वीकी जो रज तिनहैं गिनेहै जो आगे होइगो जो भयोहै मनुष्य सो पुराणपुरूप जो भगवान् तिनकी महिमा के पारकू कहाँ प्राप्त होयहै कोई नहीं होयहै ऐसे भंवके देखनचारे ऋषि जो वसिष्ठ सो कहतभये २९ देवनके देव अद्भुतहै कर्म जिनकों ऐसे जो हरि तिनको यह अवतार कों चरित्र ताहि जो सुनैहै पतिं सर्वविभूतये ॥ तदासर्वापिभूतानि भृशंमुमुक्षुरेनुप २३ ततस्त्रिन्दःपुरस्करत्य देवयानेनवामनम् ॥ लोकपालेर्दिर्दिन्ये ब्रह्मणाचासुमोदितः २४ प्राण्यत्रिभुवनेचेन्द्र उपेन्द्रभुजपालितः ॥ श्रियापरमयाजुष्टो सुमुदेगतसाध्वसः २५ ब्रह्माशर्वःकुमारश्च भृगवाद्यासुनयोनुप ॥ पितरःसर्वेभूतानि सिद्धा वैमानिकाश्रये २६ सुमहत्कर्मतद्विष्णोर्मायन्तःपरमाद्भुतम् ॥ विष्णयानिस्वानितेजसुरदितिचशशीसिरे २७ सर्वभेत्तन्मयाख्यातं भवतःकुलनन्दन ॥ उरुक्रमस्यचरितं श्रोतृणामघमोचनम् २८ पारंमहिम्न उरुविक्रमतोगृणानोयःपार्थिवानिविमभेसरजांसिमर्त्यः ॥ किंजायमानउतजातउपैतिमर्त्य इत्याहम न्ब्रह्मणिःपुरुषस्ययस्य २९ यद्देवदेवस्य हरेरेन्दुतकर्मणः ॥ अवतारानुचरितं श्रूयन्त्यातिपरांगतिम् ३० क्रियमाणेकर्मणीदं देवेषिभ्येऽथमानुषे ॥ यत्रयत्रानुकीर्त्ये तत्तेषामुत्तुर्विदुः ३१ इति श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽष्टमस्कन्धेवामनावतारचरितेऽथोर्विशतितमोऽध्यायः २३ ॥ * ॥ राजोवाच ॥ भगवच्छ्रोतुमिच्छामि हरेरेन्दुतकर्मणः ॥ अवतारकथामाद्यांमायामत्स्यविडम्बनम् १ यदर्थमदधाद्रूपं मात्स्यंलोकजुगुप्सितम् ॥ तमः प्रकृतिदुर्भर्षं कर्मघ्नस्नइवेश्वरः २ एतन्नोभगवत्सर्वं यथावद्वक्तुमर्हसि ॥ उत्तमश्लोकचरितं सर्वलोकसुखावहम् ३ सूतउवाच ॥ इत्युक्तोविष्णुरातेनभग सो परमगतिं प्राप्तुं मास होयहै ३० देवता, पितर, मनुष्यन कों कियो जो कर्म तांमै या चरित्रकू कीर्त्तन करै सो कर्म तिनकों सुकृत होयहै ३१ इति श्रीमद्भागवतेऽष्टमस्कन्धेवामनावतारचरितेऽथोर्विशतितमोऽध्यायः २३ ॥ (चतुर्विंशत्सङ्ख्येन मत्स्यस्यशास्त्रिणाः ॥ लीलोच्यतेयतःसत्यव्रतरज्ञामहाऽख्ये १ तनुतनुंविदर्श्यादौ निवेश्यनिदर्शनात् ॥ मत्स्यंपुच्छतिपृथ्वीशीलीलायाचामनोपमम् २ चौबीस के अध्यायमें प्रसंग करिके मत्स्यरूप जो भगवान् तिनकी जो लीला सो कहै हैं जा लीलाते समुद्र में सत्यव्रतकी रक्षा भई ? पहिले छोड़ो जो शरीर ताइ दिखाइके फेरि निज ऐश्वर्य दिलायत भये यातें वामन कैवी है उपमा आकी ऐसो जो मत्स्य ताहि राजा पूछेहैं २) राजा बोले हे भगवन् ! अद्भुत है कर्म जिनकों ऐसे जो हरि तिनकी मत्स्यावतारकी जो कथा ताहि सुनिचेकी इच्छाकरूं ? लोकनमें निद्य जो मत्स्यरूप ताहि जाके अर्थ धारण करतभये जो रूप दुःसहहै तम है प्रकृति जाकी जैसे कर्म कों प्रस्यो लोक धारण करै २ हे भगवन् ! यह सब हमारे आगे यथायोग्य कहियेहुं

अ०
२३

७७